VOL- VIII | ISSUE- VIII | AUGUST | 2021 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.149 | ISSN 2349-638x

विमर्श की नई धारणा– स्त्री विमर्श

डॉ.व्ही.सी.ठाकुर

स्त्री साहित्य की रचना को विशेष दायरे में लाकर उसके अस्मिता को केंद्र में रखा जाता है। स्त्री विमर्श को फेमिनिज्म कहां गया है. हिंदी साहित्य में आधुनिक युग में स्त्री विमर्श को बड़े सार्थक रूप में लिया जाता है। आज महिलाएं अपनी पहचान बनाते बनाते संघर्ष करती है, लड़ती है और अपने विश्वास के साथ आगे बढ़ती है। स्त्रियों के सामने बहुत बड़ी चुनौती यह रही है कि वह स्त्री विमर्श को सही दिशा और जीत दायरे में ले जाएं। इस सभी समूह का विकास होगा। निम्न और जनजीवन की महिलाएं भी उनसे दूर ना रहे। एक और ऐसे भी कहा जाता रहा है कि

''जो सिद्धांत पुरुषों की दृष्टि से विकसित किया गया है नारी उसमें कहीं नहीं है।''

जो सार्वजनिक और निजी विभाजन है, श्रम, समानता, स्वतंत्रता, न्याय, नारीवाद इस को नकारते हुए भी देख सकते हैं। प्राचीन भारतीय वांग्मय से लेकर आज तक किसी न किसी रूप में स्त्री विमर्श चर्चा के केंद्र में रहा है।

श्रद्धाराम फुलौरी का उपन्यास 'भाग्यवती' से लेकर स्त्री विमर्श ने आज अनेको विमर्श की गतिशीलता को बढ़ाया है। समाज में अक्सर संस्कृति, संस्कार, परिवार घर गृहस्ती के नाम पर कितनी ही स्त्रियों को दबाया जाता है।

आज की आधुनिक पढ़ी लिखी, बुद्धिजीवी स्त्री के प्रतिभा को नष्ट करने का प्रयास भी किया जाता है। हिंदी साहित्य के रचनाकारों ने बड़ी स्पष्टता से नारी विमर्श को योग्य न्याय देने की कोशिश की है। फ्रांसीसी विद्वान चार्ल्स फरिए ने कहा था कि

"किसी समाज को प्रगति का सबसे बड़ा पैमाना यह है कि उस समाज में औरतें कितनी स्वतंत्र है। और इन्हें कितनी समानता हासिल है।"

स्थिति आज भी भयावह है। नारी का मार्मिक चित्रण महादेवी वर्मा ने अपने रेखा चित्र एवं संस्मरण में किया है। इनके नारी चरित्र केवल करुणा एवं त्याग से हमें आप्लावित करते हैं बल्कि इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार व्यवस्था के प्रति उद्वेलित भी करती है। पुरुषवादी बाजार व्यवस्था भी जिम्मेदार है। महादेवी वर्मा ने नारी और नारी मुक्ति के प्रश्नों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा उनकी दृष्टि में

"नारी केवल मांस पिण्ड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर उसकी याया को सरल बना कर उसके अभिशाप को स्वयं झेल कर और अपने वरदानो से जीवन में शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ह्रदय का विकास किया है। उसी का पर्याय नारी है।"

पुरुषवादी समाज के थोपे गए प्रतिमान स्त्रियों में भी इस कदर पैठ बना चुका है कि वह स्वयं दूसरी स्त्री के शोषण में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर ही नहीं चलती बल्कि उससे आगे भी निकल जाती है। भाभी को जहां उसकी ननद प्रताड़ित करती है। वही बिंदा का शोषण उसकी सौतेली मां ने इतना किया कि उसे जीवन से ही मुक्ति मिल गई।

अतः महादेवी वर्मा ने स्त्रियों के आंखों पर पड़े पर्दे को हटाने की कोशिश की है। महादेवी वर्मा की स्त्री पात्र सिर्फ अपने करुणा दशा का ही रोना नहीं रोती बल्कि अपने करुणा, त्याग एवं बलिदान से स्त्री धर्म की महानता को प्रतिष्ठित भी करती हैं।

आधुनिक समाज में मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग की स्त्रियां हर क्षेत्र में समाज का प्रतिनिधित्व कर रही है। शिक्षित स्त्री में चेतना जागृत हुई जिससे वह अपने अधिकारों के प्रति जागृत हुई है। शिक्षा के कारण स्त्री रूढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों को पहचान कर समाज में संघर्ष करती हुई दिखाई देती है।

नासिरा शर्मा ने 'खुद की वापसी' कहानी संग्रह में स्त्री चेतना का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन्होंने स्त्री से जुड़े प्रश्नों को तलाशने का महत्वपूर्ण

कार्य किया है। 'चार बहने' में चारों बहनों की जिद, साहस और निर्भयता का चित्रण किया है।

मैत्रय पुष्पा की कहानी 'तुम किसकी हो बिन्नो' इस मर्मस्पर्शी कहानी में लेखिका ने भारतीय जनमानस पर हावी प्रभाव छोड़े हैं, जो कि बेटे से वंश चलता है। ऐसे में बेटे के स्थान पर बेटी का जन्म होना, उस बेटी के प्रति मां के मानवीयता का चित्रण लेखिका ने किया है।

राजी सेठ जीने अपनी कहानियों में 'मेरे लिए नहीं' इस कहानी में आधुनिक स्त्री का चित्रण किया है। जिसमें नायिका प्रीति अपने अस्तित्व को दूसरों की खातिर अपेक्षाकृत हीन या दोयम दर्जा देना उसे स्वीकार्य नहीं है। वह अपनी शर्तों पर जीवन जीने वाले सबल सक्षम स्त्री है।

चित्रा मुद्‌गल अपनी कहानी 'चेहरे' में स्त्री पात्रों में अन्याय अत्याचार के खिलाफ विद्रोह की भावना भर देती है। कृष्णा सोबती की कहानियां पति–पत्नी के संबंधों के महत्व को तथा भावुकता का चित्रण है।

'बादलों के घेरे में' कहानी में रवि, मीरा और मन्नो के बीच के संबंधों का चित्रण किया है। जीवन की उदासी, विवशता, नश्वरता, इस कहानी के स्वर है।

आज की स्त्री जीवन के प्रति सजग बन चुकी है वह आजाद बनकर आसमान में उड़ना चाहती है। किसी बंधन में बंधना अब उसे स्वीकार नहीं है। वह हर क्षेत्र में अपने आप को प्रतिनिधित्व के रूप में पेर रही है।

संदर्भ–

1. हिंदी कहानी और नारी चेतना–डॉ शोभा पवार
2. चित्रा मुद्‌गल की कहानियां–चित्रा मुद्‌गल
3. हंस पत्रिका–राजेंद्र यादव
4. श्रृंखला की कड़ियां–महादेवी वर्मा
5. औरत–अस्तित्व और अस्मिता– प्रभा खेतान
6. भारतीय समाज में नारी दशा एवं दिशा–डॉ आलोक कुमार कश्यप
7. देवी–मृणाल पांडे